भारत में सांस्कृतिक नेतृत्व का प्रादुर्भाव (मोदी-योगी के विशेष संदर्भ में)

रिपु सूदन सिंह*

सारांश

प्रस्तुत शोधपत्र तीन केंद्रीय प्रश्नों के विकोडन का प्रयास करता है। प्रथम, भारत में संस्कृति को कैसे परिभाषित करेंगे? संस्कृति किस तरह से कल्चर से भिन्न अर्थ रखती है? संस्कृति और सभ्यता के क्या अंतर–संबंध होते हैं? सभ्यता और संस्कृति के उत्पत्ति के क्या स्त्रोत होते हैं? दूसरा, सांस्कृतिक नेतृत्व क्या है और कैसे और किन कारणों से पैदा होता है? क्या बिना नेतृत्व के संस्कृति को बचाया और संरक्षित किया जा सकता है? तीसरा, भारत विश्व में एकमात्र सभ्यतामूलक राष्ट्र–राज्य है जहाँ राष्ट्र लोगों के भावों और अंतर–सम्बन्धों से संचालित होता है वहीं राज्य एक औपचारिक–कानूनी संस्था है जो बिना सत्ता और शक्ति के नहीं चल सकता? प्रस्तुत शोध–पत्र भारत में विश्व–दृष्टिकोण, दर्शन, संस्कृति, परंपरा, कला इत्यादि को एक सैद्धांतिक ढांचे में प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है जिससे उक्त प्रश्नों का उत्तर दिया जा सके। यदि भारतीय दर्शन के केंद्र में धर्म रहा है तो यह किस प्रकार से रिलिजन–मजहब से भिन्न है?

शब्द संकेत : राष्ट्र–राज्य, धर्म, दर्शन, संस्कृति, सभ्यता, नेतृत्व, इतिहास, भारत।

प्रस्तावना

देश की राजनीति में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद पर वृहद स्तर पर विमर्श किया गया है, पर सांस्कृतिक नेतृत्व की चर्चा लगभग न के बराबर है। क्या सांस्कृतिक राष्ट्रवाद बिना सांस्कृतिक नेतृत्व के संभव है? जैसे बिना पतवार के नाव भटक जाती है, उसी तरह बिना सांस्कृतिक नेतृत्व के राष्ट्र दिशाहीन और लक्ष्यहीन हो जाता है। संस्कृति की तुलना किसी बड़े वृक्ष से की जा सकती है। वृक्ष जितना पृथ्वी के बाहर फैला रहता है उतना या उससे भी ज्यादा वह पृथ्वी के नीचे विस्तारित होता है। जितना बड़ा वृक्ष होगा उतनी ही गहरी उसकी जड़ें होंगी। संस्कृति वृक्ष की जड़ों की तरह होती है जिसका विस्तार इतिहास में होता है। राष्ट्रवाद पृथ्वी के बाहर विस्तारित वृक्ष की तरह चतुर्दिक फैला होता है। जैसे बिना जड़ के किसी भी वृक्ष की कल्पना नहीं कर सकते, उसी तरह बिना संस्कृति के राष्ट्र की कल्पना नहीं की जा सकती। संस्कृति की जड़ें उतनी ही मजबूत होगी जितना पुराना उसका इतिहास होगा। स्पष्ट है कि संस्कृति इतिहास के गर्भ में सदैव विद्यमान रहती है। प्रतिकूल समय मे उसकी गति धीमी पड़ जाती है और अनुकूल समय में वह पल्लवित–पुष्पित होती है। संस्कृति का विकास ही इतिहास को स्वर्णिम या अंध युग में परिवर्तित कर देता है।

राष्ट्रवाद संस्कृति की चेतना की श्रेष्ठ अभिव्यक्ति

इस प्रकार किसी भी राज्य का जितना प्राचीन इतिहास होगा उतनी मजबूत वहां की संस्कृति होगी और जितना छोटा इतिहास, उतना कमजोर उसका राष्ट्रवाद। इस प्रकार राष्ट्रवाद संस्कृति की चेतना की श्रेष्ठ अभिव्यक्ति है। राष्ट्रवाद को संस्कृति ही खाद पानी उपलब्ध कराती है जिससे उसका स्वाभाविक विकास होता है। संयुक्त राज्य अमेरिका जितना बाहर फैला है और शक्तिशाली दिखता है उतना ही अंदर से खोखला और कमजोर है क्योंकि उसकी अपनी न कोई एक संस्कृति है और न ही कोई सांस्कृतिक राष्ट्रवाद। उसके राज्य की नींव कृत्रिम और बनावटी जिसे छल और बलपूर्वक स्थापित किया गया। अमेरिका अपने प्रचुर भौतिक संसाधनों और अर्थ–शक्ति के ऊपर टिका है। जैसे ही उसमें गिरावट आएगी अमेरिका के समाज के टूटने की प्रक्रिया शुरू हो जाएगी। यही कारण है कि आज अमेरिका एक संयुक्त राज्य संघ है न कि राष्ट्र। राज्य उनके लिए कृत्रिम है जो लोगों की भौतिक जरूरतों को पूरा करने का मात्र एक साधन है। शायद यही कारण है कि समूचा पश्चिमी समाज (यूरोप, उत्तरी–दक्षिणी अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया) और जिसने भी उनकी विचारधारा को अपनाया जैसे चीन (मार्क्सवाद–लेनिनवाद) इत्यादि ने अपनाया, वे सभी आज संकट के दौर से गुजर रहे हैं।

भारत में राष्ट्रवाद के प्रादुर्भाव के कारण

भारत राष्ट्र–राज्य के प्रादुर्भाव के कारण अमेरिका और यूरोप के ठीक विपरीत रहे है। पर पश्चिमी विमर्श के प्रभाव में आकर भारत को राज्यों का एक संघ घोषित किया गया और यह प्रचार किया गया कि भारत राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया से गुजर रहा है। भारतीय उपमहाद्वीप में हजारों सालों से एक राष्ट्र (भारत राष्ट्र) फल फूल रहा था जिसे वैश्विक दवाब में एक राज्य घोषित किया गया और रिलिजन और मजहब के आधार पर बँटवारे को अंजाम दिया गया। यदि भारत को एक राष्ट्र

* आचार्य, राजनीति विज्ञान, बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर केंद्रीय विश्वविद्यालय, लखनऊ

घोषित किया गया होता तो देश का बंटवारा संभव नहीं था। हजारों सालों के वाह्य आक्रमण और लंबे औपनिवेशिक शासन के बावजूद भी भारत की संस्कृति, धर्म, ज्ञान, परम्पराएँ इसीलिए जीवित रही क्योंकि भारत मे एक सांस्कृतिक और धार्मिक साम्यता थी। बावजूद भारत पाकिस्तान और बांग्लादेश में छिन्न भिन्न हो गया पर भारत राष्ट्र बचा रहा और आज जैसे ही अनुकूल परिस्थितियाँ उत्पन्न हुयी जिसमें भारत–केन्द्रित विश्व उभरता दिख रहा है।

संस्कृति की उत्पत्ति के स्त्रोत

धर्म की धारणा से ही संस्कृति निकलती है। यह धर्म की अनंत अभिव्यक्ति भी है। संस्कृति अपने को साहित्य, मूर्तिकला, स्थापत्य कला, भवन निर्माण कला, परंपरा, रीति रिवाज, तीज त्योहार, पाक–शास्त्र, फल–फूल–फसल, बोलियाँ–भाषा, लिपि, शिक्षा व्यवस्था, स्वास्थ–चिकित्सा पद्धति, कर्मकांड, पूजा–पद्धति, लोकव्यवहार, लोकनीति, राजनीतिक व्यवस्था, ज्ञान–विचार–चिंतन परंपरा इत्यादि के माध्यम से व्यक्त करती है। भारत में धर्म और संस्कृति एक ही सिक्के के दो पहलू है। यहाँ प्रत्येक व्यक्ति, जीव–जन्तु यहाँ तक की प्रकृति का भी अपना धर्म होता है। अब्राहमिक चिंतन परंपरा जिससे यहूदी, ईसाई और इस्लाम का जन्म हुआ, उनकी परंपरा रिलिजन–मजहब की परंपरा है। इनकी अवधारणा में इस सृष्टि का प्रारम्भ और अंत दोनों निश्चित होता है। यह निश्चयात्मक (डिटर्मिनिस्टिक) है और नकारात्मक–दुखांत (नेगेटिव–पेसिमेस्टिक) है। भारतीय धर्म परंपरा सकारात्मक है। इसकी अवधारणा में यह सृष्टि आदि–अनंत काल से चली आ रही है और आदि–अनंत तक चलती रहेगी। जहाँ रिलिजन–मजहब में कन्वर्शन यानि मत परिवर्तन होता है, वहीं पर भारतीय चिंतन परंपरा में धर्म को आचरण में धारण करना पड़ता है। जहाँ धर्म का आलिंगन मनुष्य को सन्मार्ग पर ले जाता है वहीं उसका त्याग अधर्म और कुमार्ग पर ले जाता है। इसीलिए यहाँ सभी को धर्म धारण करना पड़ता है जैसे राजा का राजधर्म, प्रजा का धर्म, अग्नि–धर्म, वायु–धर्म, जल–धर्म, नदी–धर्म, मेघ का धर्म, पृथ्वी का धर्म, पिता–पुत्र–पुत्री–बहन–भाई–पत्नी का धर्म। धर्म सनातन और अविनाशी बन जाता है। इस प्रकार धर्म संस्कृति के माध्यम से ही निरंतर व्यक्त होता रहता है। धर्म की गति जैसे ही रुकती है संस्कृति की अभिव्यक्ति कुंठित हो जाती है। सांस्कृतिक राष्ट्रवाद उसी धर्म और संस्कृति की एक वैचारिक–राजनीतिक अभिव्यक्ति है।

सांस्कृतिक चेतना और सांस्कृतिक नेतृत्व

जब भी सांस्कृतिक चेतना प्रखर रूप से व्यक्त होती है उसकी परिणति सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के रूप में होती है। सांस्कृतिक राष्ट्रवाद समाज के स्वाभाविक विकास का परिणाम होता है, न कि बनावटी। प्राचीन और मध्ययुगीन भारत में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के उद्घोषकों में राम, कृष्ण, महाबीर, बुद्ध, शंकराचार्य, पाणिनी, पतंजलि, मछेन्द्रनाथ, गोरखनाथ, तुलसी, कबीर, गुरुनानक, रविदास, महाराणा प्रताप, शिवाजी, गुरु अर्जुन देव, गुरु गोविंद सिंह इत्यादि प्रमुख रहें है। आधुनिक भारत में बंकिम चंद चटर्जी, विवेकानंद, अरबिन्द घोष, टैगोर, गांधी, तिलक, सावरकर, हेडगेवार, गोवलकर, राहुल सांकृत्यायन इत्यादि प्रमुख रहे है। आजाद भारत में अंबेडकर उस सांस्कृतिक चेतना के सवाहक बने जिसकी स्पष्ट झलक 1956 में लिखी उनकी पुस्तक 'बुद्धा एंड हिज धम्मा' ('बुद्ध और उनका धर्म) में देखा जा सकता है। अन्य सांस्कृतिक नेताओं में प्रमुख रहे लोहिया, देवरस, दीनदयाल हैं। उक्त लोगों में राम का नाम स्वाभाविक रूप से सबसे पहले आता है। उन्होंने उत्तर को दक्षिण भारत, विष्णु को शिव, नगर को जंगल, लोभ को त्याग के साथ जोड़कर एक नए भारत को जन्म दिया। महाबीर ने अहिंसा, बुद्ध ने ज्ञान, शंकर ने अद्वैत का प्रचार कर विश्व को ज्ञानोदित किया। राम जहाँ संस्कृति के प्रथम उद्घोषकों में थे वहीं पर वे सांस्कृतिक नेतृत्व के प्रथम उदाहरण थे। भारत के लिए वे सब एक सामूहिक धरोहर है। रिलिजन और मजहब बदलने से विश्वास और पूजा पद्धति में बदलाव आता है, उस व्यक्ति की राष्ट्रीयता और संस्कृति नहीं बदलती। सांस्कृतिक राष्ट्रवाद धर्म के गर्भ में छुपे उन शाश्वत सार्वभौमिक मूल्यों जैसे अहिंसा परमोधर्मः,[1] सर्वजन हिताय सर्वजन सुखाय, वसुधैव कुटुम्बकम, सर्वे भवनति सुखिनः सर्वे संतु निरामया इत्यादि को व्यक्त करता है।

सांस्कृतिक नेतृत्व के केन्द्रबिन्दु

सांस्कृतिक नेतृत्व के केंद्र में धर्म, संस्कृति और राष्ट्र की अवधारणा है। राष्ट्र की अवधारणा सिर्फ राज्य तक नहीं सीमित है बल्कि इसका स्वरूप वैश्विक है। राष्ट्र का वैश्विक विस्तार भौगोलिक विस्तार नहीं है बल्कि उन मूल्यों और मान्यताओं से है जो भारत के पाँच हजार साल से ऊपर के इतिहास में उत्पन्न हुये है। देखा जाये तो सांस्कृतिक राष्ट्रवाद एक वैश्विक अवधारणा है और जो भी व्यक्ति इस ज्ञान में पूर्ण पारंगत होगा वही सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का नेतृत्व कर सकता है। वर्तमान समय में मोदी–योगी का प्रादुर्भाव सांस्कृतिक नेतृत्व के क्षेत्र में एक ऐतिहासिक घटना है। यह प्रश्न भी उठता है कि मोदी और योगी ही क्यों? क्योंकि दोनों ही राजर्षि की परंपरा में आते हैं।

कौटिल्य ने अपने अर्थशास्त्र में एक आदर्श शासक को राज ऋषि कहा जो अपने 6 शत्रुओं क्रमशः काम, क्रोध, लोभ, मद, अहंकार और मूर्खता पर विजय प्राप्त कर लेता है और बुद्धिमान लोगों के साथ मिलकर विकास का काम करता है

और लोक सुरक्षा और कल्याण का पूर्ण आश्वासन देता है। राजर्षि अपने राजधर्म का पालन करते, दूसरे की पत्नी से दूर रहता, संपत्ति की लालच न करता, प्राणियों के प्रति अहिंसा का भाव रखता और दिवास्वप्न, मितव्ययिता, झूठ और फिजूलखर्ची से दूर रहता।[2] मोदी और योगी राजर्षि की कसौटी पर खरे दिखते हैं जिसका प्रमाण है उनकी लोकप्रियता और जनमत का समर्थन। गीता का एक सूत्र वाक्य है 'योगः कर्मसु कौशलम' यथा कर्म में कुशलता, उत्कृष्टता और चर्मोत्कर्ष ही योग है। उक्त सूत्र को मोदी–योगी चरितार्थ करते है और योग का व्यावहारिक रूप उनके समस्त कर्मों में परिलक्षित होता है।

सांस्कृतिक नेतृत्व की विशिष्टता

भारतीय इतिहास में राजा जनक को बहुत ही आदर और सम्मान के साथ याद किया जाता है जिन्हें विदेह कहा गया। विदेह का अर्थ होता है बिना देह का लेकिन विदेह उसे भी कहते हैं जो देह में रह कर भी देह से पूरी तरह अनासक्त हो गया हो। वह देह यानि अपने शरीर मे रहते हुये भी वह अपने देह अर्थात अपने स्वार्थ से ऊपर होकर वैश्विक सोच रखता है। अनासक्त भाव से अर्थ है जिसमें राजा अपने स्वयं के लाभ हानी से विरत होकर निस्वार्थ भाव से अपने राज धर्म का निर्वाह करता है। देखा जाये तो आधुनिक जीवन शैली और राज–भोग से विरत मोदी–योगी अपनी दृढ़ इच्छा शक्ति और बिना किसी लाग लपेट के अपने कर्तव्य का निर्वाह कर रहे हैं। जहाँ देश की राजनीति में सत्ता कांचन (धन–सम्पदा), कामिनी (नारी–स्त्री) और राज–सत्ता (शक्ति) के सम्मोहन से चलती रही है वहीं पर मोदी–योगी निर्विकार और अनासक्त भाव से राज–धर्म का पालन कर रहे है और इसी संदर्भ में वे दोनों परंपरागत नेताओं से नितांत भिन्न है। परंपरागत राजनीति मे धन, बल, मद, नशा, परिवारवाद, अपराधियों से अपवित्र गठबंधन, गैर नैतिक दृष्टिकोण इत्यादि का बोलबाला रहा है और सत्ता प्राप्ति उसका तत्काल उद्देश्य रहा है। आजाद भारत मे नेताओं की कमी नहीं है पर उनमें सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की समझ का नितांत अभाव है। उनमें से अधिकतर की सोच सीमित, व्यक्तिगत और पारिवारिक हित और सत्ता केन्द्रित है। यह अनायास ही नहीं कि लोगों ने मोदी और योगी को राष्ट्र–राज्य को चलाने का अवसर दिया।

सांस्कृतिक राष्ट्रवाद और भारतीय विश्व दृष्टि

सांस्कृतिक राष्ट्रवाद भारतीय विश्व दृष्टि की उत्कृष्ट अभिव्यक्ति भी है जो धर्म केन्द्रित, ब्रह्मांड केन्द्रित, प्रकृति केन्द्रित और मनुष्य केन्द्रित है। इस दृष्टि में विश्व के केन्द्र में भारतीय विश्वदृष्टि की वैश्विक सोच है। यह सोच विश्व को उन विचारों के साथ जोड़ता है जो सर्वजन हिताय और सर्वजन सुखाय की चिंता करता है, सभी के निरोग रहने की कामना करता है और समूचे विश्व को अपना परिवार मानता है। यह मेरे और तेरे के बीच में भेद नहीं करता। मजहब, रिलिजन, क्षेत्र और भाषा के आधार पर किसी के साथ घृणा नहीं करता। यह इतिहास में हुये अत्याचार और गलतियों को सुधारने की प्रबल इच्छा रखता है और वैश्विक राजनीति में भारत इस दृष्टि का प्रबल हिमायती है। भारत का लिबरल बौद्धिक विमर्श अपने को मात्र औपनिवेशिक अत्याचारों तक सीमित रखता है और एक काल्पनिक समरसता और सेकुलरिस्म की बात करता है। जबकि भारत और समूचे विश्व के संदर्भ मे देखा जाये तो औपनिवेशी विस्तार के पूर्व क्रूसेड और जेहाद की पीठ पर सवार होकर यूरोप, पश्चिम और मध्य एशिया के आक्रांताओ ने समूची दुनिया को रौंद डाला और अनेक उत्कृष्ट संस्कृतियों, सभ्यताओं, मूल्यों और विश्वासों को खत्म कर डाला। भारत में जब भी सांस्कृतिक नेतृत्व के बारे में बात करेंगे तो स्वाभाविक रूप से उन दोनों के द्वारा किए गए अत्याचारों की चर्चा करनी होगी और भारत समेत पूरी दुनिया पर विदेशी आक्रमण और उपनिवेशिक शासन के चलते उत्पन्न कुप्रभावों पर विमर्श करना होगा। इस कार्य को वही संपन्न कर सकता है जिसमें उसकी चेतना होगी और वही उस सांस्कृतिक नेतृत्व का निर्वाह कर सकता है।

आधुनिक भारत में सांकृतिक नेतृत्व के ध्वजवाहक

उक्त बातों पर विचार किया जाये तो स्पष्ट हो जाता है कि सांस्कृतिक नेतृत्व के ढांचे में वर्तमान भारत में उस सूची में सबसे ऊपर मोदी और योगी ही आते हैं। मोदी के पास राजनीति में संगठन और सत्ता दोनों का अनुभव है वहीं सक्रिय राजनीति में योगी 25 साल की उम्र में 1998 में लोक सभा में प्रवेश करते हैं। दूसरी ओर योगी 1998 से लगातार चार बार लोकसभा में चुने गए और 44 साल की उम्र में भारत के सबसे बड़े राज्य उत्तर प्रदेश के मुख्यमन्त्री बनते हैं। मोदी संघ और दल में लंबे समय तक काम करते हुये सत्ता से दूर रहे और जब उनको लगा कि देश की सत्ता में अपनी भागीदारी सुनिश्चित की जाये तो वे 2001 में गुजरात के 51 साल की उम्र में मुख्यमंत्री बने और 2014 में भारत के प्रधानमंत्री पद पर आसीन हुए। 1998 से 2017 तक योगी लोक सभा के सदस्य रहे और उस दौरान भाजपा चार बार केंद्र की सत्ता में थी पर योगी कभी भी मंत्री पद के होड़ में नहीं दिखे। मोदी और योगी दोनों में एक अतिरिक्त ऊर्जा, उमंग, हनक और निश्चिंतता दिखती है जो लक्ष्य के प्रति उनके दृढ़ निश्चय को दिखाती है जिसे आम आदमी पसंद करता है। भाषा उसी सांस्कृतिक चेतना को व्यक्त करती है और यही कारण है कि जब भी वे दोनों हिन्दी में अपनी बात रखते हैं आम जनता उससे तुरंत जुड़ जाती है।

परंपरा और आधुनिकता का अद्भुत संगम

मोदी और योगी के अंदर परंपरा और आधुनिकता का एक अद्भुत संगम है। एक तरफ उनके अंदर भारतीय प्राचीन

परम्पराओं और ज्ञान मीमांसा का गहरा बोध है वहीं पर आधुनिक पश्चिमी तकनीकी ज्ञान और विकास की अद्भुत समझ है। वे प्राचीनता का आधुनिक बोध है जिनके पास भावी भारत के भविष्य की स्पष्ट रूपरेखा विद्यमान है। मोदी और योगी की दिनचर्या प्रातः शुरू होकर देर रात तक चलती है। जहाँ वे कम से कम भोजन करते वहीं पर वे कम से कम नींद से काम चला लेते हैं। वे सत्ता के शीर्ष पर रहते हुये योगी और सन्यासी का जीवन बिता रहे हैं जिनके लिए राजनीति एक मिशन है जिनका लक्ष्य भारत को समृद्ध, विकसित, शक्तिशाली, स्वस्थ, ज्ञानमय और शक्तिशाली बनाना है और समूचे विश्व में भारतीय प्रजातांत्रिक मूल्य की स्थापना है। सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का उद्घोष इनकी बातों, नीतियों और उसके क्रियान्वयन से स्पष्ट होता है। आजाद भारत में नेताओं की कमी नहीं है पर उनमें सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की समझ का नितांत अभाव है। उनमें से अधिकतर की सोच सीमित, व्यक्तिगत और पारिवारिक हित और सत्ता केन्द्रित है। यह अनायास ही नहीं कि लोगों ने मोदी और योगी को चुना और राष्ट्र संचालन का अवसर दिया। मोदी और योगी की उम्र में 20 साल से अधिक का अंतर है पर दोनों के चिंतन में राष्ट्र की ही अभिव्यक्ति है।

निष्कर्ष

सांस्कृतिक नेतृत्व का प्रत्यक्ष परिणाम प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के द्वारा विचार की गयी 2047 तक भारत को विकसित बनाने की योजना अभूतपूर्व, अकल्पनीय और दूरगामी योजना में देखा जा सकता है। भारत को 30 ट्रिलियन अर्थव्यवस्था बनाने में उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के प्रदेश को अकेले 1 ट्रिलियन इकॉनमी बनाने की प्रतिज्ञा और उसके लिए इनफ्रास्ट्रक्चर की दिशा में उठाए गए कदम भी उसी दिशा में उठाया गया एक जोरदार कदम है। 1947 तक भारत की आजादी के 100 वर्ष पूरे होने पर उसे एक समृद्ध, सम्पन्न, शक्तिशाली, ज्ञानवान बनाने के लक्ष्य में सांस्कृतिक नेतृत्व की साफ भूमिका और चिन्ह परिलक्षित हो रहे हैं। इसमें भारत को नवाचार और प्रौद्योगिकी में वैश्विक नेता, मानव विकास और सामाजिक कल्याण का एक मॉडल तथा पर्यावरणीय स्थिरता का चैम्पियन बनाना है। 11 दिसम्बर 2023 को विकसित भारत @47 के लिए बुलाई गयी एक मीटिंग में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने आजादी के 75 साल पूरे होने पर अमृत काल (गोल्डेन टाइम) के प्रारम्भ की घोषणा की और सभा को संबोधित करते हुये कहा कि विकसित भारत के मुख्य पहलू इस प्रकार है; इतिहास हर देश को एक ऐसा कालखंड देता है जब वो अपनी विकास यात्रा को कई गुना आगे बढ़ाता है। एक तरह से ये उस देश का स्वर्णिम काल है। ये भारत के लिए भी स्वर्णिम काल है। ये भारत के इतिहास का वो कालखंड है जब देश एक लंबी छलांग लगाने जा रहा है। हमारे आस–पास ऐसे अनेक देशों के उदाहरण हैं जिन्होंने एक निश्चित समय में इसी तरह की लंबी छलांग लगाकर खुद को विकसित किया है। इसलिए मैं कहता हूँ; भारत के लिए भी ये सही समय है। हमें इस स्वर्णिम काल के हर पल का लाभ उठाना है, एक पल भी हमें बर्बाद नहीं करना चाहिए।"[3] भारत को अपनी शर्तों और मापदण्डों पर एक विकसित भारत बनाने की संकल्पना बिना सांस्कृतिक नेतृत्व के संभव नहीं है। इस नेतृत्व का साहस, दूरगामी सोच, इतिहास बोध भारत को निश्चय ही अपने लक्ष्य की ओर ले जाएगा जिसमें भारत के विश्व गुरु की भूमिका की शुरुआत होगी।

सन्दर्भ

1. महाभारत 13.117.37
2. https://egyankosh.ac.in/bitstream/123456789/56755/1/B-1U-1.pdf
3. https://innovateindia.mygov.in/viksitbharat2047/

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. बंकिम चन्द्र चट्टोपाध्याय, आनद मठ
2. वाल्मीकि, रामायण
3. वेद व्यास, महाभारत
4. पाणिनी, लघु सिद्धान्त कौमुदी
5. पातंजलि, योग सूत्र
6. त्रिपितक
7. आदि शंकरचार्य ब्रह्मसूत्र भाष्य
8. वीडी सावरकर, हिंदूइज्म
9. बीआर अंबेडकर, द बुद्ध एंड हिज धम्मा